ओम् शान्ति। प्रीतम को कौन बुलाते हैं? प्रीतमाएँ। प्रीतीमा को सजनी, भक्त भी कहा जाता है। बुलाते हैं साजन को, भगवान को अथवा बाप को। इसमें सर्वव्यापी का ज्ञान तो नहीं हुआ। प्रीतम को बुलाते हैं कि आन मिलो। गाया भी जाता है– जीवआत्माएँ अपने प०पि०प० को बुलाती हैं– ओ प०पि०प० आओ, रहम करो। सतयुग में तो ऐसे नहीं बुलावेंगे। बरोबर यह दुखधाम है तो प्रीतम को बुलाते हैं। प्रीतम भगवान एक है, क्रियेटर एक है। विश्व अथवा सृष्टि का चक्र भी एक है। बच्चे जानते हैं, कलियुग से फिर सतयुग होगा। सतयुग में फिर से एक आदि सनातन देवी–देवता धर्म वालों का राज्य होगा। यह नॉलेज है ना। तुम बच्चे जानते हो, प्रीतम कैसे आए हैं। शिव तो है निराकार। तुम सब निराकारी आत्मा हो, यहाँ आई हो पार्ट बजाने। अब निराकार बाप कैसे आया? राजयोग कैसे सिखलाया? कृष्ण तो नहीं सिखला सकता। वो तो सतयुग स्थापन करने वाला नहीं है। उनको रचयिता नहीं कहेंगे। सब जीवआत्माओं का प्रीतम एक प०पि०प०। क्रियेटर निराकार को कहेंगे। कहते हैं, मेरा जन्म, शिवजयन्ती भी मनाते हैं। मेरा जन्म कोई कृष्ण सदृश नहीं होता। कृष्ण कैसे माँ के गर्भ से जन्म लेता है वो भी बच्चों का(को) साक्षात्कार कराया है। बाप कहते हैं, मेरा नाम रुद्र भी है। रुद्र लिंग को कहेंगे। गीता में भी है– यह है रुद्र ज्ञान यज्ञ अर्थात शिव का रचा हुआ यज्ञ। तो ज़रूर निराकार शिव को साकार में आना पड़े। तो बाप बैठ समझाते हैं, गीत के दो अक्षर से ही सर्वव्यापी का ज्ञान निकल जाता है। प्रीतम को कृष्ण नहीं कहेंगे। कहते ही हैं– ओ गॉड फादर! ओ प्राण आधार! क्योंकि वो सबका प्राण आधार है, सबको जमघटों के दुख की पीड़ा से छुड़ाते हैं। तो ज़रूर उनको आना पड़े। बाप कहते हैं, मैं कल्प–2 के संगम युगे आता हूँ। यह कल्याणकारी युग है। सतयुग के बाद तो फिर दो कला कम हो जाती है। यह संगमयुग चढ़ती कला का है। इसमें बुद्धि से काम लेना चाहिए। नए के लिए तो बहुत समझाते हैं– तुम्हारा बाप निराकार परमपिता परमात्मा शिव है, उनको याद करो, बस। और गुरू–गोसाईं आदि के मंत्र सब हैं भक्तिमार्ग के। अभी भक्तिमार्ग मुर्दाबाद, ज्ञानमार्ग जिंदाबाद होता है। भक्ति आधा कल्प चलती है, फिर ज्ञान का वर्सा आधा कल्प चलता है। ज्ञान वहाँ नहीं रहेगा। ज्ञान दिया जाता है दुर्गति से सद्गति में ले आने लिए। गुरू का काम है शिष्य अथवा फॉलोवर्स की गति–सद्गति करना; परन्तु वो जानते नहीं कि गति–सद्गति क्या होती है। गाते भी हैं, सर्व का सद्गति दाता राम, पतित–पावन सीताओं का राम। बच्चे जानते हैं, सतयुग में एक ही धर्म रहता है, सूर्यवंशी राज्य चलता है, फिर राम राज्य। त्रेता में दो कला कम हो जाती है। वहाँ रावण आदि होते नहीं, कोई उपद्रव की बात नहीं। रघुपति राजाराम कहते हैं, यह तो है झूठ। यह सारी दुनिया लंका, रावण का राज्य है। तुम बंदर थे ना। इस समय मनुष्य सब बंदर से भी बदतर हैं; क्योंकि सबमें 5 विकार प्रवेश हैं। कितना मनुष्यों में क्रोध है, एक/दो को कैसे मारते हैं– हम रशिया को खत्म करेंगे, हम चीनियों से लड़ेंगे। मरने–मारने की तैयारी करते रहते। यह है बंदर सेना। हम, तुम, सब विकारी थे। अब बाप आए रावण पर जीत पहनाते हैं। शास्त्रों में क्या–2 बातें लिख दी हैं। ऐसे थोड़े ही पूँछ को आग लगी और सारी लंका जल गई। वास्तव में यह सारी दुनिया लंका है। तुम ब्राह्मण कुल भूषण बच्चे भी पहले पतित थे, अभी तुम माया रावण पर जीत पहनते हो। बाप ने आए बुद्धि का ताला खोला है। बुद्धिवानों की बुद्धि बाप है ना। मनुष्य बंदर से बदतर बन गए हैं तो बातें भी बंदर (की ही) करते रहते। बंदर सेना कैसे होगी! क्या–2 डाल दिया है, मनुष्यों का माथा ही खराब कर दिया है। खराब किया है इन साधु,संत,महात्माओं ने। बाप कहते हैं, यह फिर भी होना ही है। सर्वव्यापी का ज्ञान आगे नहीं था। कहते थे– परमात्मा बेअंत हैं। बेअंत कह फिर सर्वव्यापी कहना कितनी बड़ी भूल है। शिवोहम्, तत् त्वम् कह देते हैं। कब शिवोहम्, कब फिर ब्रह्मोहम् भी कह देते। यह भी रॉंग हो जाता। ब्रह्म तो रहने का स्थान है। शिव ब्रह्मतत्व में रहता है; इसलिए इनका नाम है ब्रह्माण्ड। हम आत्माएँ भी वहाँ की रहने वाली हैं। यह लोग फिर कब शिवोहम्, कब ब्रह्मोहम् कह देते। वो तो रॉंग हो गया। शिव है नाम–

रूप से न्यारा। फिर ये शरीरधारी कैसे कहते "शिवोहम्"? यह भी सम(झने) की बातें हैं ना। सो भी जब .....रेगुलर समझें तब ज्ञान से चोली रंगी जाए। समझाना है, तुम्हारा बेहद का बाप भी है, जिससे भारत को जीवनमुक्ति का वर्सा मिलता है, बाकी सबको मुक्ति का वर्सा मिलता है। बाप कहते हैं– बच्चे, अब नाटक पूरा हुआ, तुम्हारे 84 जन्म पूरे हुए हैं। इतना समय पार्ट बजाया है, अब फिर वापस जाना है। बाप आकर हमारी राजधानी स्थापन करते हैं, तो ज़रूर जब संगम पर स्थापना हो तब तो सतयुग में तुम वर्सा लो। तुम कितना अच्छा कर्म सिखलाते हैं। ल०ना० ने क्या किया जो ऐसे ऊँच बने? अभी तुम जानते हो, बाप राजयोग सिखलाते हैं। सतयुग में थोड़े ही बैठ सिखलावेंगे। वहाँ तो है ही ल०ना० का राज्य। यह है कल्याणकारी संगमयुग। इसमें अच्छी रीति पुरुषार्थ करना है। बाप कहते हैं, देह का भान छोड़ अपन को आत्म निश्चय कर, मुझ बाप को याद करो। तुम धक्के खाए–2 थक गए हो ना। सन्यासी–उदासी भी नहीं जानते कि कब से तुमने धक्के खाए हैं। ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण–ब्राह्मणियाँ ही त्रिकालदर्शी बनते हैं। वर्णों का भी समझाया है। चोटी है ब्राह्मण वर्ण। भारतवासी चित्र बनाते हैं, चोटी देते नहीं। ब्राह्मण वर्ण गुम कर दिया है। प्रजापिता ब्रह्मा है ना तो पहले ब्राह्मणों की चोटी चाहिए। इस समय सब शूद्र हैं। तुम मुखवंशावली ब्राह्मण बने हो। तो गीत में भी सुना– प्रीतम आन मिलो। सर्वव्यापी की बात है नहीं। अभी तुम प्रीतमाएँ प्रीतम के सन्मुख बैठे हो। प्रीतम अपना स्वर्ग का वर्सा दे रहे हैं। कैसा अच्छा प्रीतम है! कहते हैं, कृष्ण ने भगाया, पटरानी बनाया; परन्तु समझते नहीं, पटरानी क्या चीज़ होती है। अभी तुम जानते हो और स्वर्ग का महाराजा–महारानी बनने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। यह राजयोग है। इसमें प्रजा भी है। प्रजायोग कम्बाइन्ड है। सिर्फ राजा–रानी थोड़े ही बनेंगे। सब कहते हैं, हम महाराजा–महारानी बनेंगे। हम आए हैं राजयोग सीखने; परन्तु सब थोड़े ही महाराजा–महारानी बनेंगे। हिम्मत चाहिए। पूरा बलि होना चाहिए। भक्तिमार्ग में जब नौधा भक्ति करते हैं तब कुछ साक्षात्कार होता है। शिव पर बलि चढ़ते हैं। काशी का कितना प्रभाव है! बलि चढ़ना भी यहाँ की बात है। यह भी समझाया है, रामायण, गीता, भागवत आदि सतयुग में होते नहीं। ऐसे नहीं ये कोई परम्परा से चले आते हैं। यह तो द्वापर से चले हैं। मुसलमानों ने आकर राज्य लिया। (मोहम्मद) गज़नबी ने लूटा। यह सब बातें तुम जान गए हो। हमने ही पूज्य से पुजारी बन अपना मंदिर बनाया। तो कितनी हमको मिल्कियत होगी! 5000 वर्ष की बात है, सो भी शुरुआत में। फिर भक्तिमार्ग में भी तुमको कितना धन रहता है। जिसने इतना हीरों–जवाहरों का मंदिर बनाया, उनका अपना महल क्या होगा! नाम ही कितना ऊँच है– स्वर्ग! ल०ना० कितने जड़े हुए देखते हो! अभी तो बिचारों पास पैसा नहीं है। आगे तो ल०ना० के लिए हीरों का सब कुछ बनाते थे, बाद में सब लूट–फूट ले गए हैं। वहाँ तो सोने की ब्रिक्स होती हैं, तुम उनको महल बनाते हो। अक्ल भी अच्छा रहता है। अभी तो बेअक्ल हैं, तब तो कंगाल हुए हैं ना! नशा इतना है जो गुर–2 करते रहते हैं। आत्मा बुलाती है प्रीतम को– आन मिलो प्रीतम। बाप कहते हैं, सर्वव्यापी के ज्ञान ने तो तुमको कौड़ी मिसल बना दिया है। भारतवासियों ने कितनी मेरी ग्लानि की है। जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि। जैसी सृष्टि वैसी दृष्टि। कितने शिवबाबा पर, देवताओं पर कलंक लगाए हैं। श्री कृष्ण इतना मीठा, सतोप्रधान, उनके लिए भी ठोक दिया है कि तक्षक सर्प ने डसा। अब सर्प तो है माया। वहाँ माया हो कैसे सकती! यह तो जैसे खिलौने बना दिए हैं। कितने झूठ कलंक लगाए हैं; इसलिए बाप कहते हैं– यदा यदा.....। जब इनमें प्रवेश करूँ तब तो ब्राह्मणों को रचूँ। ब्रह्मा मुख से ही ब्राह्मण रचने हैं ना। विलायत जाऊँगा क्या? जो नम्बरवन पावन, पूज्य था, अब पुजारी बना है, उनके ही पतित शरीर में आता हूँ। त्रिमूर्ति कहते हैं, शिव को निकाल दिया है। त्रिमूर्ति ब्रह्मा का तो अर्थ ही नहीं निकलता। बाप कहते हैं, कल्प–2 संगम पर इस तन में आकर तुम ब्राह्मणों को रचता हूँ। तुम ब्राह्मण–ब्राह्मणियों का यह

सर्वोत्तम तन है। अभी तुम ईश्वरीय गोद में हो। ईश्वर बाप से बेहद का वर्सा लेते हो। जानते हो, उनको ही याद करते–2 हम उनके पास पहुँच जावेंगे। कहते हैं ना– अंत काल जो स्त्री सिमरे...। जैसा–2 सिमरण, ऐसा जन्म मिलता आया है। यह है अंत काल का समय। तुमको बाप बैठ समझाते हैं, इस समय मुझ बाप को ही याद करना है। देही–अभिमानी बनो। अशरीरी भव। अपन को आत्मा निश्चय कर मुझ प०पि०प० को याद करो। एक जगह निष्ठा में नहीं बैठना है। बच्चे तो चलते–फिरते, उठते–बैठते बाप को याद करते हैं ना। बेहद का बाप कहते हैं, और सबसे बुद्धि निकाल मामेकम् याद करो। इसमें मेहनत है। अभी यह अंतिम जन्म है। तुम बाप के बने हो तो उसने ही कितने मीठे नाम दिए हैं। बाप ने संदेशी द्वारा नाम भेजे। वहाँ बहुत अच्छे–2 नाम होते हैं। फिर भी वो ही नाम पड़ेंगे जो कल्प पहले पड़े होंगे। सर्वव्यापी का अर्थ भी समझना चाहिए ना। सब भक्त भगवान हैं तो फिर मिलेगा क्या? कुछ भी नहीं। अभी तुम ईश्वर की गोद में हो। ईश्वरीय गोद से तुम ब्राह्मण बनते हो। शूद्र वर्ण खत्म हुआ। यह वर्ण हैं ही तुम भारतवासियों के लिए। तुम जानते हो, हम शूद्र वर्ण से ट्रान्सफर हो ब्राह्मण धर्म में आए हैं। ब्राह्मण–ब्राह्मणियाँ वो ही बनेंगे जो कल्प पहले बने थे। झाड़ वृद्धि को पाता जाता है। कितने अच्छे–2 बच्चों को माया का तूफान लगने से गिर पड़ते हैं। युद्ध तो है ना। तुम सर्वशक्तिवान के बच्चे हो तो माया भी कम न है। आधा कल्प रावण का राज्य चला है। इस समय माया भी ज़ोर से पछाड़ेगी। इसको तूफान कहा जाता है। हनुमान का मिसाल है ना। तुमको माया के कितने भी तूफान आएँ; परन्तु हिलना नहीं है, सदैव हर्षित रहना है। जितना रूस्तम बनेंगे उतना माया ज़ोर से वार करेगी। देखेगी, लायक है वा नहीं? कहते हैं– बाबा, माया ने तो काला मुँह कर दिया। काला मुँह हुआ, बस, बुद्धि को ताला लग जावेगा, धारणा होगी नहीं; क्योंकि बाप को कलंक लगाया ना। लौकिक बाप भी कहते हैं ना, तुम कुल–कलंकित तो मुआ भला। बाप समझाते हैं, तुम कब भी कुल–कलंकित न बनना। बाप परमधाम से आते हैं तुमको पढ़ाने। भगवानुवाच्य, मैं तुमको राजाओं का राजा बनाने आया हूँ। राजाई ज़रूर स्थापन होगी। इस समय तक जितने ब्राह्मण बने हैं, इतने ही बने थे, बनते रहेंगे। सर्वव्यापी की बात पर समझाओ। तुम बाप के लिए कहते हो, बाप कुत्ते–बिल्ले में है, टट्टी में है, कितनी हमारे बाप की ग्लानि करते हो! आगे हम भी करते थे। मुख्य है परमात्मा सर्वव्यापी की ग्लानि। फिर देवी–देवताओं की भी ग्लानि करते हैं। देवताएँ वाममार्ग में जाते हैं तो फिर देवताएँ थोड़े ही रहते हैं। सन्यासी कहते हैं, अहम् ब्रह्मास्मि, शिवोहम्। यह भी झूठ। कितना नुकसान करते हैं और फिर ब्रह्मोहम्, शिवोहम् कह देते। वो रहने का स्थान और वो शिवबाप– कितना रात–दिन का फर्क है! वो दोनों को एक समझ लेते। बच्चों को भी याद रखना है, उस पारलौकिक बाप का कोई बाप नहीं है। वो है ही स्वयं नॉलेजफुल, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप, चैतन्य, पतित–पावन, रहमदिल, नॉलेजफुल, ब्लिसफुल। उनपर कोई ब्लिस करने वाला नहीं है। वो खुद ही बाप, टीचर, सद्गुरू है। बेहद बाप के घर में बैठे हो। यह है ईश्वरीय कुटुंब, फिर होगा दैवी कुटुंब। वृद्धि को पाते जावेंगे। 84 का चक्र भी बुद्धि में याद है– हम सो देवता इतने जन्म, हम सो क्षत्रिय इतने जन्म, फिर हम सो देवता बनेंगे। माया दुखधाम बनाती है, बाप आकर सुखधाम बनाते हैं। कितना सहज है। खूब पुरुषार्थ करना चाहिए। अब का पुरुषार्थ कल्प लिए तुम्हारा पुरुषार्थ बन जावेगा। कहेंगे, कल्प–कल्पांतर हम ऐसे पुरुषार्थ करते आए हैं। मम्मा–बाबा भी पुरुषार्थ करते हैं। यह ही फिर पूज्य सो देवी–देवता ल०ना० बनते हैं। श्रीमत से हम श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बनते हैं। तो कदम–2 पर श्रीमत लेनी पड़े। अभी तुम देखते हो श्रीमत और उनसे गति–सद्गति कैसे मिलती है। प्रैक्टिकल में सिर्फ तुम ही जानते हो। बापदादा का गुडमॉर्निंग। ओम